आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/24-26

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 11 अंक : 7 मार्च, 2024 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) सतीश के. गर्ग

कुलपति सन्देश

सामाजिक व आर्थिक विकास के लिए महिला सशक्तिकरण आवश्यक: कुलपति

भारतीय संस्कृति में नारी के सम्मान को बहुत महत्व दिया गया है तथा समस्त भारतीय ग्रन्थों में यह भी उल्लेख है कि जिस घर में नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। वर्तमान युग में भी महिलाएं सभी क्षेत्रों में अग्रणी हैं। समाज में महिलाओं के योगदान के प्रति समाज को लैंगिक एकता व समानता हेतु जागरूक करने के लिए प्रतिवर्ष 8 मार्च को अर्न्तराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया जाता है। यह दिवस महिला सशक्तिकरण पर केन्द्रित है, जिसमें महिलाओं का आदर सत्कार और उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए विभिन्न तरह के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं। महिला दिवस की शुरूआत अमेरिका के न्यूयार्क शहर में की गई थी। वर्ष 1908 में 15 हजार महिलाओं द्वारा कम काम, बेहतर वेतन और वोट देने का अधिकार प्राप्त करने के लिए आन्दोलन किया गया था। इस मिशन के एक वर्ष बाद अमेरिका की सोशलिस्ट पार्टी ने ''राष्ट्रीय महिला दिवस'' की घोषणा की। आज महिलाएं प्रत्येक क्षेत्र में नाम रोशन कर रही है। देवी अहिल्या बाई होलकर, इला भट्ट, मदर टेरेसा, महादेवी वर्मा, अरूणा आसफ अली, राजकुमारी अमृतकौर, सुचेता कृपलानी व कस्तूरबा गांधी आदि प्रसिद्व महिलाओं ने अपने संस्कारों, मनवचन व कर्म से जगत में अपना नाम रोशन करके इतिहास रचा है। भारत में महिलाएं कृषि, पशुपालन, घरेलू कर्तव्यों और बच्चों की देखरेख के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार है। पशुपालन से जुड़े 95 फीसदी कार्य महिलाओं के द्वारा ही क्रियान्वित किये जा रहे हैं। वर्तमान में महिलाएं परिवार की आर्थिक स्थिति को बढ़ाने व गरीबी से मुकाबला करने में अहम भूमिका निभा रही हैं। महिलाओं का सशक्त होने का आशय केवल घर से निकलकर नौकरी करना या पुरूषों के कंधे से कंधा मिलाकर चलना भर नहीं है बल्कि पशुपालक के रूप में महिलाओं की भूमिका की पहचान करना, उनका समर्थन करना, उनकी निर्णय लेने की शक्ति और क्षमताओं को प्रोत्साहित करते हुए महिलाओं के आर्थिक व सामाजिक सशक्तिकरण में भूमिका को स्वीकार करना सबसे महत्वपूर्ण है। सशक्तिकरण के द्वारा महिलाओं में निर्णय लेने की क्षमता का विकास करना हम सभी का उत्तरदायित्व है, ताकि महिलाएं भी विकासशील भारत को विकसित बनाने में अपना योगदान दे सकें। ग्रामीण क्षेत्र में महिलाओं की स्थिति कुछ चिंतनीय है। अतः ग्रामीण क्षेत्र की महिलाओं में तकनीकी कौशल का विकास करके एवं आय के साधनों में वृद्वि करके उनका सशक्तिकरण किया जा सकता है।

आप सभी को अन्तर्राष्ट्रीय महिला दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं।

प्रो. (डॉ.) सतीश कुमार गर्ग

माननीय पशुपालन मंत्री श्रीमान जोराराम कुमावत द्वारा पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर में किसान भवन का लोकार्पण

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

मानव उपभोग हेतु पशु उत्पादों में खाद्य संरक्षा पर 21 दिवसीय शीतकालीन प्रशिक्षण

वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर के पशुपोषण विभाग द्वारा आई.सी.ए.आर. वित्त पोषित "पशु खाद्य संरक्षा और पशु उत्पादित खाद्य पदार्थों का मानव के सुरक्षित उपभोग के लिए गुणवत्ता मूल्यांकन" विषय पर 21 दिवसीय शीतकालीन प्रशिक्षण 5–25 फरवरी तक आयोजित किया गया। प्रशिक्षण का उद्‌घाटन मुख्य अतिथि डॉ. आर.सी. अग्रवाल, उपमहानिदेशक (कृषि शिक्षा) आई.सी.ए.आर., नई दिल्ली एवं वेटरनरी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत द्वारा किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। प्रो. अग्रवाल ने उद्‌घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए कहा कि इस प्रशिक्षण का विषय वर्तमान परिपेक्ष में तर्कसंगत है हम पशु स्वास्थ्य को इग्नोर करके मानव स्वास्थ्य की कल्पना नहीं कर सकते। पशु आधारित उत्पादों का गुणात्मक मूल्य निर्धारण बहुत आवश्यक है। प्रो. अग्रवाल ने प्रशिक्षण के दौरान माइक्रो लर्निग, ब्लेन्डेड लर्निग पर फोकस करने का सुझाव दियां। विशिष्ट अतिथि प्रो. ए.के. गहलोत के कहा कि राज्य की जी.डी.पी. में पशुपालन को बहुत अधिक योगदान है। वर्तमान में पोल्ट्री एवं एक्वा फीड की तुलना में अभी केटल फीड़ को बढ़ावा नहीं मिला है, इसमें और अधिक गुणात्मक शोध की भी जरूरत है। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा कि मानव स्वास्थ्य प्रत्यक्ष रूप से पशु वनस्पति एवं वातावरण के स्वास्थ्य पर निर्भर करता है। उन्होंने एकल स्वास्थ्य पर फोकस करते हुए कहा कि स्वस्थ पशु उत्पादों के माध्यम से स्वास्थ्य मानव जीवन की परिकल्पना कर सकते है। प्रशिक्षण समापन समारोह के मुख्य अतिथि प्रो. एन.एस. राठौड़ पूर्व कुलपति, ए.पी.यू.ए.टी. उदयपुर एवं पूर्व उपमहानिदेशक (कृषि शिक्षा) आई.सी.ए.आर. ने अपने सम्बोधन में कहा कि प्रशिक्षण कार्यशाला का उद्देश्य विषय के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना एवं प्रशिक्षण तकनीको एवं नवाचारों की उपयोगित बढाना है। पशु उत्पादों को बढ़ाने के साथ–साथ हमें गुणवत्ता निर्धारण पर भी विशेष ध्यान देना होगा ताकि इन उत्पादों का मूल्य संवर्धन हो सके। विद्यार्थियों को प्रयोगिक एवं तकनीकी शिक्षा के साथ–साथ अनुभव लर्निंग एवं उद्यमशिलता को बढ़ावा देना चाहिए। सहायक महानिदेशक (मानव संसाधन प्रबन्धन) प्रो. एस.के. शर्मा ने कहा कि पशुपालन एवं पौल्ट्री सेक्टर में 70 प्रतिशित लागत पशु खाद्य पर आती है। पशु उत्पादों की गुणवत्ता निर्धारण का मुख्य आधार फीड़ गुणवत्ता है। नवीन शोध तकनीकों से हम खाद्य गुणवत्ता का मूल्यांकन कर सकते है। जो कि ना केवल पशु अपितु मानव स्वास्थ्य की दृष्टिकोण से भी महत्वपूर्ण है। निदेशक एन.आर.सी.सी. प्रो. ए. साहु ने भी प्रशिक्षाणार्थी को सम्बोधित किया। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में राजस्थान के साथ–साथ पंजाब, गुजरात, आसाम, बिहार, तमिलनाडु, नई दिल्ली, यू.पी., एम.पी., जम्मू राज्यों के 23 प्रशिक्षाणार्थी ने हिस्सा लिया। जिसमें शिक्षक, वैज्ञानिक एवं विषय विशेषज्ञ शामिल है। प्रशिक्षण के दौरान देश के ख्याति प्राप्त विश्वविद्यालय, आई.सी.ए.आर. संस्थानों के शिक्षकों एवं वैज्ञानिकों द्वारा विभिन्न विषयों पर 52 व्याख्यानों का आयोजन किया गया।अधिष्ठाता प्रो ए.पी. सिंह ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया।

कौशल विकास केन्द्र के भवन का लोकार्पण

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय बीकानेर में कौशल विकास केन्द्र के नवनिर्मित भवन का लोकार्पण 5 फरवरी को डॉ. राकेश चन्द्र अग्रवाल, उपमहानिदेशक (कृषि शिक्षा), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली एवं प्रो. सतीश के. गर्ग कुलपति, वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा किया गया। डी.डी.जी (आई.सी.ए.आर.) डॉ. राकेश चन्द्र अग्रवाल ने इस अवसर पर कहा कि केन्द्र सरकार देश में कौशल विकास को बहुत महत्व दे रही है। आई.सी.ए.आर. ने भी कृषि एवं पशुचिकित्सा क्षेत्र में कौशल विकास को बढ़ावा दिया है, वेटरनरी विश्वविद्यालय में इस कौशल विकास केन्द्र के शुरू हो जाने से जहां एक तरफ प्रशिक्षार्थियों के ज्ञान एवं कौशाल में वृद्धि होगी दूसरी तरफ उन्हे इंटरेक्शन के माध्यम से राज्य व केन्द्र सरकार की नीतियों को जानने का मौका भी मिलेगा। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा विश्वविद्यालय के पास प्रशिक्षण हेतु विषय विशेषज्ञ उपलब्ध है, सुविधा युक्त इस केन्द्र के शुरू हो जाने से दीर्घकालीन प्रशिक्षणों को सुचारू रूप से आयोजित किया जा सकेगा। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने कहा कि कौशल विकास केन्द्र में एक साथ 25 प्रशिक्षार्थियों के ठहरने की सुविधा के साथ–साथ एक बड़ा प्रशिक्षण हॉल है, जो की प्रशिक्षण की सभी सुविधा एवं साधनों से सुसजित है।

मिलिट्री एवं पैरामिलिट्री सर्विस में पशुचिकित्सकों के रोजगार अवसर पर प्रेरक व्याख्यान

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय बीकानेर द्वारा 3 फरवरी को महाविद्यालय के प्लेटीनम जुबली ईयर के तहत आयोजित व्याख्यान श्रृंखला के दौरान कमाण्डेट डॉ. जी.एस. नाग (बी.एस.एफ.) द्वारा वेटरनरी विद्यार्थियों के बी.एस.एफ. एवं पैरामिलिट्री सर्विस में कैरियर की संभावनाओं के अवसर पर प्रेरक व्याख्यान दिया गया। कमाण्डेंट डॉ. नाग ने प्रजेंटेशन के माध्यम से बी.एस.एफ. में पशुचिकित्सकों की भूमिका, पैरामिलिट्री सर्विस में काम आने वाले सहयोगी एनीमल श्वान, ऊंट एवं घोड़ो की उपयोगिता पर विस्तृत जानकारी प्रदान की। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने कहा कि वेटरनरी प्रोफेसन रोजगार की दृष्टि से बहुत व्यापक है विद्यार्थियों को अपने शिक्षण एवं रोजगार हेतु सभी अवसरों को पूर्ण उपयोग करके निष्ठा एवं लगन से कार्य करना होगा। अधिष्ठाता प्रो. ए.पी. सिंह ने स्वागत भाषण दिया एवं विद्यार्थियों को प्रेरक व्याख्यानों का पूर्ण उपयोग करने हेतु प्रेरित किया। सहायक कमाण्डेंट बी.एस.एफ. डॉ. पूजा ने विद्यार्थियों को बी.एस.एफ. में प्रवेश हेतु पूरी प्रक्रिया को समझाया।

माननीय पशुपालन मंत्री द्वारा किसान भवन, व्यायामशाला एवं छात्रावास के प्रथम व द्वितीय तल का लोकार्पण

स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर स्थित किसान भवन, व्यायामशाला एवं छात्रावास के प्रथम व द्वितीय तल का माननीय केबिनेट मंत्री, पशुपालन एवं डेयरी, गौपालन विभाग, देवस्थान विभाग, राजस्थान सरकार श्री जोराराम कुमावत के द्वारा लोकार्पण किया गया। मुख्य अतिथि माननीय श्री जोराराम जी कुमावत ने अपने अभिभाषण में कहा कि ये तीनों ही लोकार्पण संस्थान के लिये अति महत्वपूर्ण है जिसमें किसानों एवं विद्यार्थियों को भविष्य में लाभ होगा। माननीय मंत्री महोदय ने अपने अभिभाषण में पशुचिकित्सा व्यवसाय को उत्तम व्यवसाय बताया क्योकि पशुचिकित्सक उनका ईलाज कर रहे है जो अपनी समस्या बता नहीं पा रहे है तथा यह एक परोपकार का कार्य है। अपने अभिभाषण के अन्त में विद्यार्थियों के स्टाईफण्ड बढ़ाने के लिये कुलपति राजुवास को पूर्ण सहयोग का आश्वासन दिया। कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग द्वारा राजुवास के सभी संघठक महाविद्यालयों के बारे में अवगत कराया तथा कहा कि राज्य सरकार की 100 दिवसीय कार्य योजना अन्तर्गत विश्वविद्यालय की संघठक महाविद्यालयों द्वारा 18 पशुचिकित्सा शिविरों का आयोजन किया जा रहा है, तथा विश्वविद्यालय द्वारा शिक्षण की गुणवत्ता को बढ़ाने हेतु 80 सहायक आचार्यो की भर्ती हेतु प्रस्ताव भेजा गया है जिसकी स्वीकृति से विश्वविद्यालय की शिक्षण गतिविधियॉ गुणवत्तापूर्ण हो पायेगी। अधिष्ठाता डॉ. शीला चौधरी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

जीनोमिक शोध के महत्व पर प्रेरक व्याख्यान

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर में 26 फरवरी को विद्यार्थियों हेतु प्रेरक व्याख्यान के अन्तर्गत प्रो. चन्द्र शेखर पारीक, निकोलस कोपरनिकस युनिवर्सिटी, टोर्न, पौलॅण्ड ने "जिनोमिक रिसर्च" विषय पर व्याख्यान दिया और बताया कि वर्तमान समय जिनोमिक शोध का महत्व बहुत बढ़ गया है। स्तनधारी प्रजातियों में आर्थिक महत्व के विशेष जीनो की पहचान कर हम ना केवल बीमारियों पर नियंत्रण किया जा रहा है, अपितु पशुओं की उत्पादकता को भी बढ़ाया जा रहा है। प्रो. पारीक ने मल्टी ओमिक शोध, जीनोमिक अनुक्रम बायोइनफोर्मेटिक एनालाईसिस के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि आज मोलिक्यूलसर साईस ना केवल मानव अपितु पशुओं में भी वरदान साबित हुई है। निदेशक मानव संसाधन विकास प्रो. बी.एन. श्रृंगी ने भी विद्यार्थियों को सम्बोधित किया।

राज्य सरकार की 100 दिवस की कार्य योजना

दुलचासर, गाढ़वाला एवं कालू गांवों में पशुचिकित्सा शिविर

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर एवं पशुपालन विभाग, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में राज्य सरकार की 100 दिन की कार्य योजना के अंतर्गत 14 फरवरी को डूंगरगढ़ तहसील के दुलचासर गांव में तथा 20 फरवरी को गांव कालू एवं 21 फरवरी को गांव गाढ़वाला में पशुचिकित्सा शिविरों का आयोजन किया गया। निदेशक क्लिनिक डॉ. प्रवीन बिश्नोई ने बताया कि पशुचिकित्सा शिविरों के माध्यम से पशुओं में फैलने वाली विभिन्न संक्रामक बीमारिया, गायनेकोलॉजिकल एवं सर्जिकल समस्याओं का निवारण किया गया। शिविर के दौरान पशुपालन विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. एस.पी. जोशी उपस्थित रहे। इन शिविरों में कुल 821 पशुओं को ईलाज किया गया जिसमें से 641 पशुओं को कुपोषण एवं अन्तः परजीवियों से बचाव हेतु मिनरल मिक्सचर एवं कृमिनाशक दवा दी गई।

पशुधन जागृति अभियान के अन्तर्गत गांव चांधन एवं धोलिया में पशु प्रजनन शिविर

वेटरनरी विश्वविद्यालय के पशु अनुसंधान केन्द्र चांधन (जैसलमेर) द्वारा भारत सरकार के पशुधन जागृति अभियान के अन्तर्गत 1 फरवरी को ग्राम चांधन तथा 21 फरवरी को ग्राम धोलिया में एक दिवसीय जागरूकता एवं पशु प्रजनन शिविरों का आयोजन किया गया। केन्द्र के प्रभारी अधिकारी डॉ. विष्णु कुमार विजय ने बताया कि इन शिविरों में कुल 500 पशुपालकों ने भाग लिया। इन शिविरों में 195 पशुओं का विभिन्न बीमारियों का उपचार किया गया तथा 1378 पशुओं हेतु मिनरल सप्लीमेंट एवं कृमिनाशक दवा का वितरण किया गया।

प्रो. धूड़िया जयपुर में फैलो अवार्ड से हुए सम्मानित

एसोसिएशन ऑफ एनिमल सांइटिस्टस द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय के प्रो. राजेश कुमार धूड़िया को फैलो अवार्ड से नवाजा गया। प्रो. धूड़िया को यह सम्मान एसोसिएशन ऑफ एनिमल सांइटिस्ट के अपोलो कॉलेज ऑफ वेटरनरी मेडीसिन, जयपुर में दिनांक 17 से 19 फरवरी तक "पशुस्वास्थ्य और उत्पादकता में तकनीकी हस्तक्षेप" विषय पर आयोजित द्वितीय वार्षिक सम्मेलन एवं राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान पशुचिकित्सा एवं पशुपालन क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिए प्रदान किया गया।

डॉयग्नोस्टिक इमेजिंग यूनिट और सेमिनार हॉल का भूमि पूजन एवं शिलान्यास

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर में केम्पस परिसर में गुरूवार को कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग के कर कमलो द्वारा डायग्नोस्टिक इमेजिंग यूनिट और सेमिनार हॉल का भूमि पूजन एवं शिलान्यास किया गया। प्रो. गर्ग ने बताया कि पशुचिकित्सा संकुल बीकानेर के सुद्दढ़ीकरण एवं पशुपालकों को बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध करवाने हेतु विश्वविद्यालय निरन्तर प्रयारत है। पशुशल्य चिकित्सा एवं विकिरण विभाग में इस डायग्नोस्टिक एवं इमेजिंग यूनिट हॉल के बन जाने से यहां छोटे व बड़े जानवरों में डीजीटल एक्स–रे, सोनोग्राफी के कार्य बेहतर एवं सुविधाजनक हो सकेगे। इन संसाधनों के विकसित हो जाने से पशुपालकों का उन्नत एवं बेहतर चिकित्सा सुविधा उपलब्ध हो पाएगी। प्रो. गर्ग ने बताया कि महाविद्यालय परिसर में लगभग 80 सीटो की क्षमता वाले नये सेमिनार हॉल के बन जाने से कांफ्रेंस, मीटिंग, सेमिनार आदि के सुविधाजनक आयोजन हो पायेगा।

श्वानो ने दिखाए विभिन्न कौशल एवं रोमांचित करतब

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय एवं केनाइन वेलफेयर सोसाइटी, बीकानेर के संयुक्त तत्वावधान में 25 फरवरी को महाविद्यालय परिसर में डॉग शो आयोजित किया गया। डॉग शो में आई.जी. पुलिस, बीकानेर ओम प्रकाश मुख्य अतिथि एवं प्रो. ए.के. गहलोत, पूर्व कुलपति, राजुवास सम्मानीय अतिथि रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता, कुलपति प्रो. सतीश के. गर्ग ने की। कुलपति प्रो सतीश के. गर्ग ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की। अधिष्ठाता प्रो. ए.पी. सिंह ने सभी डॉग पालकों का स्वागत किया। डॉग शो में ग्रेट डेन, सेण्ड बर्नार्ड, पीट बुल, जर्मन शेफर्ड, लैब्राडोर, पग, डेसन्ड, चाऊ–चाऊ प्रजाति मुख्य आकर्षक रहे। विभिन्न वेशभूषा एवं रंग बिरगे श्रृंगार के साथ फैंसी ड्रेस कम्पीटीशन ने दर्शकों को मोहित किया। मिल्ट्री से ट्रेनिंग प्राप्त श्वानो हरतगेज करनामों एवं विभिन्न करतबों का प्रदर्शन किया।

बायोमेडिकल वेस्ट के उचित प्रबंधन पर स्कूली विद्यार्थियों को किया जागरूक

वेटरनरी विश्वविद्यालय के जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण एवं प्रौद्योगिकी केंद्र, राजुवास द्वारा 26 फरवरी को राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रामपुरा बस्ती, लालगढ़, बीकानेर में एक जागरुकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया।. पशु जैव चिकित्सा अपशिष्ट निस्तारण एवं प्रौद्यौगिकी केंद्र की मुख्य अन्वेषक डॉ. दीपिका धूड़िया ने बताया कि विद्यार्थियों को डॉ. देवेन्द्र चौधरी द्वारा अस्पतालो से निकलने वाले जैविकी अपशिष्ट का मानव स्वास्थ्य पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों के बारे में जागरूक किया गया तथा जैव चिकित्सकीय अपशिष्ट के उचित निस्तारण के बारे में बताया गया। विद्यार्थियों को जूनोटिक बीमारियों एवं रेबीज रोग से बचाव की जानकारी भी प्रदान की गई। कार्यक्रम के दौरान रणवीर गोदारा एवं स्कूल की संस्था प्रधान सरोज गोदारा एवं अध्यापक उपस्थित रहे।

ग्राम गाढ़वाला में स्वच्छता अभियान

राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वारा यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पांसिबिलिटी के अंतर्गत गोद लिए ग्राम गाढवाला में गुरूवार को स्वच्छता अभियान चलाया गया। समन्वयक और कार्यक्रम अधिकारी, डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने बताया कि ग्राम गाढ़वाला के ब्राह्मणी माता मंदिर चौराहा परिसर में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों द्वारा स्वच्छता अभियान एवं श्रमदान किया गया तथा ग्राम वासियों के मध्य संदेश दिया गया कि सभी ग्रामवासियों को मिलकर अपने गांव को स्वच्छ एवं सुंदर बनाने में अपना सहयोग करना चाहिए।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू)

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़ (चूरू) द्वारा 12, 17 फरवरी को गांव देपालसर एवं पूलासर गांवों में तथा दिनांक 14 एवं 21 फरवरी को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 106 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक

पशु विज्ञान केन्द्र, टोंक द्वारा 6 एवं 15 फरवरी को आनलाईन एक दिवसीय एवं दिनांक 8 फरवरी को गांव नागौरियों की ढाणी तथा 22 फरवरी को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 66 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर)

पशु विज्ञान केन्द्र, कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 6, 15, 17, 19, 21 एवं 23 फरवरी को गांव क्विारदिया, उबार, भदीरा, ऊंच, हीगोंली एवं बिरहस गांवो में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 110 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 6, 9, 19, 21, 23 एवं 27 फरवरी को गांव डोंगरपुर, कसीमपुर, खरगपुर बिजोली, सेन्डरा एवं सालेपुर गांवों में तथा 24 एवं 26 फरवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में कुल 240 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर)

पशु विज्ञान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 6 एवं 9 फरवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन प्रशिक्षण शिविर, 28 फरवरी को केन्द्र परिसर तथा 3 एवं 19 फरवरी को गांव उतमदेसर एवं कालू में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों तथा 20–21 फरवरी आत्मायोजनातर्गत दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरो का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 190 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा 7, 9, 21, 22 एवं 29 फरवरी को गांव दरबारी खेड़ा, मामावली, गोल, जामोंतरा एवं अणगोर गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 139 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोजावर–पाली

पशु विज्ञान केन्द्र, जोजावर (पाली) द्वारा 9, 12, 20 एवं 26 फरवरी को गांव कोटाडी, गुडादुर्गा, धानला एवं जानुदा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 48 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा

पशु विज्ञान केन्द्र, कोटा द्वारा 5, 8, 13, 15, 20, 24 एवं 26 फरवरी को गांव बल्लभपुरा, पांचड़ा, कालारेवा, भगवानपुरा, रानीपुरा, गामच एवं खेड़ा गांवों में तथा दिनांक 21 एवं 28 फरवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 228 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा (चित्तौडगढ़) द्वारा 7, 20 एवं 23 फरवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 97 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा 5, 17, 20 एवं 21 फरवरी को गांव माणकलाव, कुड़ी, बालेसर एवं उचियारड़ा में दिनांक 6, 8 एवं 24 फरवरी को ऑनलाईन तथा दिनांक 9, 12, 29 फरवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 307 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा 6, 8 एवं 12 फरवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण एवं 22–28 फरवरी को सात दिवसीय वैज्ञानिक बकरी पालन विषय पर केन्द्र परिसर में पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 130 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा 7, 9, 12, 13, 14, 15, 19, 20, 21, 22, 24, 26, 27 एवं 28 फरवरी को गांव रामा, धनेला, बिछीवाड़ा, कतिसोर, वेसलाफलां, टोंकवासा, नरणिया, आसपुर, संचिया, खाखरिया फला, रामगढ़, साफली फलां, अमृतिया एवं नवाडेरा गांवों में तथा 2, 3, 17, 23 एवं 29 फरवरी को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 527 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं

पशु विज्ञान केन्द्र, झुंझुनूं द्वारा 6, 8 एवं 27 फरवरी को एक दिवसीय ऑनलाइन एवं 9, 26 एवं 29 फरवरी को केन्द्र परिसर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों से 131 पशुपालक एवं कृषक लाभान्वित हुए।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोबनेर (जयपुर) द्वारा 5, 7, 9, 13, 14, 19, 21, 23, 27 एवं 28 फरवरी को गांव गुमानपुरा, भिखावास, सुरसिंहपुरा, फुलेरा, नान्दरी रेनवाल, लोहरवाड़ा, चम्पपुरा, सुभरामपुरा, जोबनर एवं रामसिंहपुरा गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 206 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा 1, 6, 12, 21, 26, 28, 14, 19 एवं 23 फरवरी को गांव पावती, सोमता, रामसीन, बिब्लसर, टाटोल, भूगांव, कोलार, सिकवाड़ा एवं पुनांगकलां गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 143 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर)

पशु विज्ञान केन्द्र, बाकलिया (नागौर) द्वारा 3, 5, 6, 7, 8, 9, 15, 17 एवं 19 फरवरी को गांव देवरा, हुसैनपुरा, तेजपुरा, तिलौती, इन्द्रापुरा, ध्यावा, गिरदोदा, कुसुम्बी एवं दाबड़ी गांवों में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 177 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 7, 12 एवं 21 फरवरी गांव चाइया, लखासर एवं फेफना गांवा में एक दिवसीय तथा दिनांक 28–29 फरवरी को केन्द्र परिसर में दो दिवसीय कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 125 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

मुर्गियों में रानीखेत बीमारी का प्रभाव और बचाव

मुर्गियों में रानीखेत एक संक्रामक एवं घातक बीमारी है जो न्यूकैस्टल डिजीज के नाम से भी जानी जाती है। यह एक विषाणुजन्य रोग है जो घरेलु पक्षियों के साथ–साथ मुर्गियों तथा अनेक जंगली पक्षी की प्रजातियों को प्रभावित करती हैं।

रानीखेत बीमारी के कारक : यह रोग पेरामिक्सीवीरिडी समुह से संबंधित विषाणु के द्वारा होता है जो कि एक प्रकार का RNA वायरस है जिससे मुर्गी, टर्की, बत्तख, तितर, कबूतर, कोयल, तोता आदि जैसी कई प्रजातियाँ प्रभावित होती है।

रानीखेत बीमारी के संक्रमण का तरीका : यह बीमारी संक्रमित पक्षियों के मल–मूत्र,दूषित हवा–पानी, और दूषित दाने आदि के संपर्क में आने से फैलता है। यह वायरस दूषित बेडिंग मटेरियल और संक्रमित इनक्यूबेटर आदि के माध्यम से भी फैल सकता है।

रानीखेत बीमारी के प्रमुख लक्षण

- साँस लेने में तकलीफ होना
- पतला सफेद दस्त आना
- लंगड़ाना, ट्रेमर जैसे झटके आना
- नाक से पानी आना
- अण्डे के उत्पादन में कमी
- आकाश की तरफ देखना
- शरीर के वजन में कमी आना
- यकृत का खराब होना

रानीखेत बीमारी का बचाव एवं उपचार रानीखेत बीमारी एक वायरस जनित रोग है इसलिए इसके लिए विशेष दवा नहीं है फिर भी बैक्टीरिया संक्रमण से बचाव के लिए एंटीबायोटिक दवाओ का प्रयोग किया जाता है।

- इस रोगसे बचाव के लिये टीकाकरण सर्वोत्तम तरीका है
- F&1 LIVE तथा लसोटा लाईव स्ट्रेन वैक्सीन की खुराक 5–7 दिन पर देनी चाहिए
- आर–बी स्ट्रेन की बूस्टर खुराक 8–9 सप्ताह तथा 16–20 सप्ताह की आयु पर टीकाकरण करना चाहिए।
- रोग उभरने पर तुरंत रानीखेत एफ 1 नामक वैक्सीन लगा दी जाए
- वैक्सीन की खुराक पक्षियों के आंख और नाक से देनी चाहिए
- विटामिन वीमेरोल 2 एमएल प्रति लीटर पानी में देवे

रानीखेत बीमारी टीकाकरण

- लसोटा वैक्सीन :– पहला सप्ताह में 1 बूंद प्रत्येक आंख से या नाक से
- आर टू बी वैक्सीन :– 0.5 एमएल प्रति लीटर या सबक्यूटेनियस 8–18 सप्ताह में

रानीखेत बीमारी की रोकथाम और नियंत्रण वर्तमान मे रानीखेत रोग को पूरी तरह खत्म करने के लिए कोई भी प्रकार की कारगर और असरदार दवा नहीं है सिर्फ टीकाकरण के माध्यम से ही इस रोग की रोकथाम की जा सकती है।

- मुर्गीपालन शुरू करने से पहले जलवायु का अध्ययन करना चाहिए।
- मुर्गी घर के दरवाजे के सामने बाहर से आने वाले आगन्तुको के लिए पैर धोने की उचित व्यवस्था होनी चाहिए।
- मुर्गी के घर, बर्तनों एवं इनक्यूबेटर की अच्छे से सफाई करनी चाहिए।
- रोगी मुर्गियों का उचित उपचार एवं टीकाकरण करना चाहिए।
- रोगी पक्षियों को स्वस्थ पक्षियों से अलग रखने का प्रबंधन करना चाहिए।
- बाहरी लोगों का फार्म में प्रवेश वर्जित होना चाहिए और आवश्यक होने पर ही साफ सफाई का ध्यान रखते हुए प्रवेश कराए।
- दो मुर्गी फार्म के बीच कम से कम 100–150 मीटर की दूरी रखनी चाहिए।
- मुर्गियों का खाना–पानी उत्तम गुणवत्ता का होना चाहिए।
- बीमार मुर्गे–मुर्गियों का तुरंत उपचार करवाना चाहिए।

डॉ. रोहित कुमार डामोर, डॉ. सुनील राजोरिया और डॉ. राहुल शर्मा
पशु विज्ञान केंद्र, डूंगरपुर

पशुपालन नए आयाम
फार्म–4 (नियम 8 देखिए)

1.	प्रकाशन स्थान	: बीकानेर (राज.)
2.	प्रकाशन अवधि	: मासिक
3.	प्रकाशक का नाम	: प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया
	(क्या भारत का नागरिक है)	: हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:
	पता	: निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर
4.	मुद्रक का नाम	: प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया
	(क्या भारत का नागरिक है)	: हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:
	पता	: निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस राजुवास, बीकानेर
5.	संपादक का नाम	: प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया
	(क्या भारत का नागरिक है)	: हां
	(क्या विदेशी है तो मूल देश)	:
	पता	: निदेशक प्रसार शिक्षा, बिजय भवन पैलेस राजुवास, बीकानेर
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्रों के स्वामी हो तथा समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के साझेदार या हिस्सेदार हों	: लागू नहीं

मैं प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया एतद् द्वारा घोषणा करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिए गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक : 01–3–2024

(प्रो. {डॉ.} राजेश कुमार धूड़िया)
प्रकाशक के हस्ताक्षर

लेप्टोस्पाइरोसिस से रहे सावधान

लेप्टोस्पाइरोसिस पशुओं से मनुष्यों में फैलने वाला घातक एवं संक्रामक रोग है जो कि मुख्यतयाः चावल और गन्ने के खेतों में काम करने वाले किसानों, मछली पालकों, पशुपालकों, पशुचिकित्सकों, डेयरी व बूचड़खानों में काम करने वाले श्रमिकों तथा सीवर श्रमिकों के लिए एक व्यावसायिक खतरा है। इस रोग का खतरा अधिकतर भारी वर्षा तथा बाढ़ के परिणामस्वरूप ज्यादा रहता है। इसके अलावा गर्म आर्द्र उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों में इस रोग का प्रकोप ज्यादा देखने का मिलता है।

रोग का कारणः लेप्टोस्पाइरोसिस एक प्रकार का जीवाणु जनित रोग है जो कि लेप्टोस्पाइरा की विभिन्न प्रजातियों के कारण होता है, जिसमें से मुख्य प्रजातियां निम्न हैः

- लेप्टोस्पाइरा इक्टोहैमोरिधिका
- लेप्टोस्पारा केनिकोला
- लेप्टोस्पाइरा पोमावा
- लेप्टोस्पाइरा इन्टेरोगेन्स

रोग का प्रसारः लेप्टोस्पाइरोसिस दुनिया भर में घरेलू एवं जंगली पशुओं को प्रभावित करता है। संक्रमित चूँहों के मूत्र के माध्यम से यह रोग भेड़, बकरियों, भैंस, सुअर घोड़ो तथा मनुष्यों में फैल सकता है। यह संक्रमण त्वचा के घाव या कट, मुंह, नाक व आखों तथा दूषित पानी पीने से फैलता है। इसके अलावा पशुओं के साथ काम करने, दूषित मिट्टी, कीचड़ व बाढ़ के पानी के सम्पर्क में आने से यह संक्रमण होने का खतरा बढ़ जाता है। जल जमाव व बाढ़ के कारण चूहें घरों में घुस जाते है, जिससे यह रोग होने का खतरा और बढ़ जाता है तथा चावल के खेतों में पानी भरा रहने के कारण उसमें काम करने वाले मनुष्यों में इस रोग का प्रसार हो सकता है।

रोग के लक्षणः तीव्र संक्रमण से ग्रसित व्यक्ति में तेज बुखार, आंखें लाल होना, ठंड लगना, सिरदर्द, मांसपेशियों में दर्द, पेट में दर्द, उल्टी तथा दस्त जैसे लक्षण देखने को मिलते हैं।

गंभीर लेप्टोस्पाइरोसिस के लक्षण तीन से दस दिन बाद शुरू होते है जिसमें से मुख्य लक्षण हैः

- खांसी के साथ खून आना
- छाती में दर्द एवं श्वांस लेने में तकलीफ
- त्वचा व आंखों का गंभीर पीलापन
- पेशाब में खून आना तथा पेशाब करने की मात्रा में कमी आना
- संक्रमित व्यक्ति में मेनिनजाइटिस हो जाता है तथा फेंफड़े गंभीर रूप से क्षतिग्रस्त हो जाते है।
- अगर गर्भावस्था के दौरान लेप्टोस्पाइरोसिस विकसित होता है तो गर्भपात का खतरा बढ़ जाता है।

निदानः

लक्षणों के आधार पर उस व्यक्ति का पता लगाना जिन्होनें प्रकोप वाले क्षेत्र की यात्रा की हो अथवा चूँहों के सम्पर्क में आये हो।

- रक्त व पेशाब के नमूनों का कल्चर करवाना।
- लेप्टोस्पाइरोसिस एंटीबोडीज के लिए रक्त परीक्षण करवाना।

इलाजः

- हल्के संक्रमण के लिए एंटीबायोटिक्स दी जाती है जैसे एमोक्सीसिलिन, एम्पीसिलिन व एजिथ्रोमाइसिन आदि
- गंभीर संक्रमण के लिए पेनीसिलीन, एम्पीसिलीन दवा तथा नमक वाले तरल नाड़ के द्वारा दिये जाते है व गंभीर संक्रमण में ब्लड़ ट्रांसफयूजन की भी आवश्यकता रहती है।

बचावः

- पूल, तालाब व नदियों के पास जाने से बचे तथा दूषित पानी में तैराकी करने से बचे।
- बीमार व मृत पशुओं को छूने से बचे।
- वाटरप्रूफ ड्रेसिंग के साथ त्वचा के घावों को कवर करें तथा घावों की नियमित सफाई करें।
- जूते, दस्ताने एवं मास्क आदि पहन कर रखें।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सफलता की कहानी

मामदीन के लिए बकरियां बनी एक नियमित आय का स्त्रोत

बीकानेर जिले की लूणकरनसर तहसील के युवा पशुपालक मामदीन चौहान कई वर्षों से पशुपालन तथा कृषि कार्य कर रहे हैं। बारिश किसानों के लिए एक पहेली बनी हुई है, ऐसे में पशुपालन व्यवसाय में स्वरोजगार की अपार सम्भावनाएं है। मामदीन चौहान ने बकरी पालन को एक व्यवसाय के रूप में शुरू करने का निश्चय किया। उनके परिवार में 2–3 बकरी सदैव रहती थी जिनका उपयोग सिर्फ घर की जरूरतों को पूरा करने के लिये किया जाता रहा, यहीं से उन्हें बकरी पालन की प्रेरणा मिली और इन्होंने 15 बकरियों से बकरी पालन व्यवसाय की शुरूआत की। इसके बाद से मामदीन चौहान पशु विज्ञान केन्द्र, लूणकरनसर के निरंतर सम्पर्क में रहें और विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेकर पशुपालन में खनिज लवणों की उपयोगिता, संतुलित पशु आहार, कृमिनाशक दवा का महत्व, पशुओं में टीकाकरण, अन्तः–बाह्य कृमियों से बचाव, स्वच्छ दुग्ध उत्पादन के तरीके, अजोला की तकनीक व इसके लाभ, मौसमी बीमारियां एवं उनके बचाव इत्यादि के बारे में कई जानकारियां प्राप्त की। इन सभी जानकारियों एवं तकनीकों को अपनाकर मामदीन ने वैज्ञानिक बकरी पालन में सफलता प्राप्त की। अब वर्तमान में इनके पास कुल 55 बकरियां है। उनके जूनून, कड़ी मेहनत एवं प्रयास से इनका बकरी पालन का व्यवसाय रंग लाया तथा पशु विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन से उन्होंने बकरी पालन के साथ–साथ पशुओं के लिये अजोला की यूनिट स्थापित की है जिससे पशुओं के लिये हरे चारे की कमी पूरी हो सके। मामदीन चौहान के अनुसार उन्हें बकरी पालन से वर्ष में लगभग 2 लाख रूपये की आमदनी होती है। मामदीन का मानना है कि बकरी पालन से कम खर्चें में अधिक मुनाफा कमाया जा सकता है। इनकी इस सफलता से आस–पास के क्षेत्र में उन्होंने अपनी नई पहचान बना ली है। अपनी इस सफलता का श्रेय अपनी मेहनत, परिवारजनों एवं पशु विज्ञान केन्द्र, लूणकरनसर के वैज्ञानिकों को देते हैं।

सम्पर्क- श्री मामदीन चौहान
इन्द्रा गांधी नहर के पास, 280 वाली पुली, लूणकरणसर (मो. 9024252571)

निदेशक की कलम से...

पशुओं में कम उत्पादन के लिए जिम्मेदार है बाह्य परजीवी

भारत देश दुग्ध उत्पादन में विश्व में प्रथम स्थान पर है, परन्तु हमारे देश में प्रति पशु उत्पादकता अत्यधिक कम है। किसी भी पशु की उत्पादकता को कायम रखने के लिए उसका स्वस्थ होना आवश्यक है। पशुओं के स्वास्थ्य एवं उत्पादकता पर जीवाणु, विषाणु, कवक जनित रोगों के अतिरिक्त परजीवी जनित रोगों का भी अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। इन बाह्य परजीवियों में मुख्य रूप से चिचड़, किलनी, माइट, जूएं, मक्खियां आदि होते है। उष्ण कटिबन्धीय देशों में जलवायु की वजह से बाह्य परजीवी बहुलता से पाये जाते है। लम्बे समय तक खून चूसने से शरीर में खून की कमी हो जाती है, तत्पश्चात पशु दुर्बल हो जाता है तथा त्वचा की गुणवत्ता भी प्रभावित होती है। दुधारू पशुओं में दूध की कमी हो जाना, कृषि कार्य करने वाले पशुओं की शक्ति क्षीण होना तथा पशु के विकास में लगातार कमी हो जाना आदि प्रमुख लक्षण है। किलनियों का अधिक संक्रमण होने पर नवजात पशुओं में रक्ताल्पता, बैचेनी तथा शरीर भार में कमी देखी जाती है। यह बाह्य परजीवी पशुओं के शरीर को कमजोर कर देते हैं तथा कई प्रकार की हीमोप्रोटोजोअन से होने वाली बीमारियां पशु के शरीर में प्रवेश होने से पशु उत्पादकता में काफी कमी हो जाती है तथा समय पर उचित उपचार नही किया जाये तो पशु की मृत्यु भी हो जाती है इससे पशुपालकों को आर्थिक हानि भी उठानी पड़ती है। बाह्य परजीवियों का उपचार व रोकथाम अति आवश्यक है। पशुओं के शरीर पर बाह्य परजीवियों के संख्या तथा महत्व को देखते हुए विशिष्ट परजीवीनाशक कार्य योजना बनाकर पशु का उपचार करना चाहिए। पशु को एक स्थान पर बांधकर रखे जाने की अवस्था में पशुगृह अथवा पशु बाड़े में भी परजीवीनाशक दवाईयों का छिड़काव करना चाहिए क्योंकि परजीवी में जीवन चक्र से जुड़ी कुछ अवस्थाऐं जमीन पर भी मौजूद होती है। दवा के छिड़काव के समय पशु के मुंह पर जाली लगा देनी चाहिए व चारा–दाना, घास, पानी आदि को भी ढक देना चाहिए। पशुओं के बाड़े की प्रतिदिन सुबह–शाम साफ–सफाई करनी चाहिए व पशु को पोष्टिक व खनिज युक्त आहार देना चाहिए जिससे पशुपालक भाई आर्थिक नुकसान से बच सकते है।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

"धीणे री बात्यां"
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट   भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया